त्रिभुवन पति की देख उदारि लिररक्स

त्रिभुवन पति की देख उदारि लिररक्स
त्रिभुवन पति की देख उदारि, ि ीनो भवन थराने लगे है
हाथ में चावल लेि े ही, सब में दर भयो जाि।
जाने अब ककस लोक की सम्पति होये समाप्ि ॥
सब में दर भयो जाि।
हर दाने का मोल अगर देने लगे भगवान।
रह जायेगा सृस्टि में बस एक ही धनवान॥
बस एक ही धनवान॥
प्रेम केभ ूं खे, प्रेम केि ूं दुल, प्रेम केभाव से खाने लगे है।
प्रेम केभ ूं खे, प्रेम केि ूं दुल, प्रेम केभाव से खाने लगे है।
ि ूं दुल केदानो में, दीन का ददनया दररद्र चबाने लगे है।
ि ूं दुल केदानो में, दीन का ददनया दररद्र चबाने लगे है।
एक एक मुठ्ठी में एक एक लोक,
एक एक मुठ्ठी में एक एक लोक, सुदामा केभाग्य में जाने लगे है॥
एक एक मुठ्ठी में एक एक लोक, सुदामा केभाग्य में जाने लगे है
त्रिभुवन पति की देख उदारि, ि ीनो भवन थराने लगे है।
त्रिभुवन पति की देख उदारि, ि ीनो भवन थराने लगे है
पहली मुठ्ठी देि े ही प्रभु ने टवगा सुदामा केनाम ककया है
द सरी मुठ्ठी में पृथ्वी लोक का वैभव ववप्र को सौप ददया है॥
ि ीसरी मुठ्ठी में देने लगे है,
ि ीसरी मुठ्ठी में देने लगे है जो वैकुण्ठ ि ो लक्ष्मी ने रोक ललया है
ि ीसरी मुठ्ठी में देने लगे है जो वैकुण्ठ ि ो लक्ष्मी ने रोक ललया है॥
अपना तनवास भी दान में दे रहा है।
कैसा दानी ये मेरा वपया है।
अपना तनवास भी दान में दे रहा है।
कैसा दानी ये मेरा वपया है।